मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

# पौधों में अमृत की तरह काम करने वाला खाद पंचगव्य–

**डॉ दया शंकर मीणा डॉ विजय शंकर आचार्य राजेन्द्र कुमार झटवाल और अजय बोहरा**
कीट विज्ञान स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर

पंचगव्य एक जैविक खाद या प्राकृतिक सामग्री से बनी हुई जैविक विकास उत्तेजक औषधि है। जो पौधे के विकास को बढ़ाने के साथ ही मिट्टी के उपयोगी जीवाणुओं की रक्षा करता है। जिसमे मुख्य रूप से गाय का गोबर गौ–मूत्र दूध है इसके साथ ही दो अन्य उत्पाद दही और घी भी होते हैं। इनको उचित अनुपात में मिश्रित कर के खमीर के लिए छोड़ दिया जाता है। यह पंचामृत के समान मिश्रण है जिसमे गोबर और गौ–मूत्र को शहद और चीनी के साथ बदल दिया जाता है। खमीर का उपयोग एक फेरमेंटर केले मूंगफली का केक और नारियल के पानी के रूप में किया जाता है। यह माना जाता है कि यह एक शक्तिशाली जैविक कीटनाशक के साथ ही विकास मे बढ़ोत्तरी करने वाला उर्वरक है।

पंचगव्य का उपयोग कृषि कार्यो में उर्वरक और कीटनाशकों के रूप में भी किया जाता है।

**1 पंचगव्य बनाने के लिए आवश्यक सामग्री और उसकी मात्रा**

दूध 2 लीटर गाय का
गाय का दही– 2 लीटर
गौ– मूत्र 3 लीटर
गाय का घी– 500 ग्राम
ताजा गोबर गाय का– 5 किलो
गन्ने का रस 3 लीटर अथवा 500 ग्राम गुड़ 3 लीटर पानी में
नारियल का पानी– 3 लीटर
पके केले 12
ताड़ी या अंगूर का रस –2 लीटर 1–100 ग्राम खमीर पाउडर के साथ 100 ग्राम गुड़ 2 लीटर पानी में उपयोग करने से पहले 30 मिनट के लिए रखा जाता है
2 लीटर नारियल का पानी 10 दिनो के लिए एक बंद प्लास्टिक कंटेनर में रखा जाता है।

**2 पंचगव्य बनाने की विधी**

पंचगव्य को मिट्टी कंक्रीट या प्लास्टिक से बना एक बड़े मुंह वाले कंटेनर मे तैयार किया जाना चाहिए। कंटेनर किसी धातु का नही बना होना चाहिए कंटेनर में गाय का गोबर और घी का मिश्रण डालना चाहिए। फिर उस मिश्रण को दिन मे 2 बार 3 दिन तक मिश्रित करते रहना चाहिए। चौथे दिन कंटनेर मे शेष सामग्री मिलाये फिर अगले 15 दिनो तक दिन मे 2 बार मिश्रित करते रहे। उन्नीसवे दिन पंचगव्य मिश्रण उपयोग के लिए तैयार हो जाता है।

**3 पंचगव्य एकत्रित करने की विधि**

पंचगव्य को छाया में और हर समय ढककर रखा जाना चाहिए इस मिश्रण की देखभाल करते रहना चाहिए ताकि कोई कीट मिश्रण मे न गिरे और न ही इसमे कोई अंडे पैदा हो। इसे रोकने के लिए कंटेनर को हमेशा तार के जाल या प्लास्टिक ढक्कन के साथ बंद करके रखा जाना चाहिए।

**4 उपयोग करने की विधि**

पंचगव्य का उपयोग अनाज व दाल (धान गेहूँ राजमा आदि तथा सब्जियों (शिमला मिर्च टमाटर गोभी व कन्द वाली में किया जाता है। छिड़काव के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी आवश्यक है। बीज उपचार से लेकर फसल की कटाई के 25 दिन पहले तक 25 से 30 दिन के अन्तराल में इसका उपयोग किया जा सकता है। प्रति बीघा 5 लीटर पंचगव्य 200 लीटर पानी में मिलाकर पौधो के तने के पास छिड़काव करे।

**5 पंचगव्य की खुराक**

1 छिड़काव के लिए –पानी में मिश्रण का 3: मिलाए अर्थात 3 लीटर पंचगव्य 100 लीटर पानी के साथ मिलाए। जो छिड़काव के लिए सबसे उचित अनुपात है।

2 सिचाई के लिए –सिचाई के लिए प्रति लीटर पंचगव्य की मात्रा 20 लीटर एकड़ होनी चाहिए।

3 पौध के लिए – पौधशाला से पौधो को निकालकर घोल में डुबायें और रोपाई करें। पौधा रोपण या बुआई के पश्चात 15 – 25 दिन के अन्तराल पर 3 बार लगातार छिड़काव करें।

फूल आने से पहले 15 दिनो में दो बार छिड़काव व खिले हुए फूलो पर 10 दिनो में (दो बार छिड़काव

5 पंचगव्य के इस्तेमाल और फायदे

1 पौधे के लिए जैविक विकास उत्तेजक और प्रति रक्षा वर्धक का कार्य करता है। यह रोग से प्रभावित पौधे और दूसरे जीव को भी ठीक करता है।

2 उपज को बढ़ता है अधिकांश मामलो में उपज 20 से 25 फीसदी तक बढ़ जाती है। कुछ मामलो में जैसे खीरा उपज दोगुनी हो जाती है और उत्पाद की गुणवत्ता को भी बढ़ाता है।

3 यह फलो में मीठास और सुगंध के स्तर को बढ़ाता है।

4 फसल को जल्दी तैयार कर देता है। दो सप्ताह पहले फसल की कटाई की जा सकती है।

5 यह पानी की जरूरत को 25 से 30 फीसदी तक कम कर देता है जिससे यह सूखे की स्थिति मे भी जिंदा रहता है।

6 खेती का खर्च भी कम हो जाएगा।

7 व्यवसायिक खेती में अनुशंसित खाद और रसायन के छिड़काव के मुकाबले इसका इस्तेमाल बहुत ज्यादा फायदेमंद है।

8 जैविक खेती क्षेत्र की बढ़ोत्तरी में भी यह मदद करता है।